शक्ति और साहस के साथ जीओ!

आप कभी अकेले नहीं हो। चाहे आप अपने मसीही विश्वास में 1 दिन या 30 साल के हों, यह सत्य उन सभी के लिए अटल है जिनके साथ जीवन हमें चुनौती दे सकता है। इस योजना में प्रभावी रूप से परमेश्वर की सहायता को गले लगाने के तरीके को सीखें। डेविड जे. स्वांत द्वारा लिखी गयी पुस्तक, "आउट ऑफ़ दिस वर्ल्ड: ए क्रिश्चियनन्स गाइड टू ग्रोथ एंड पर्पस" से लिया गया।

Copyright © 2013 David J. Swandt. All Rights Reserved.

Published under license agreement by Twenty20 Faith, Inc. (USA). Not intended for resale. For more information visit:

www.twenty20faith.org

"आप कभी अकेले नहीं हो"

अक्सर यह कहा जाता है कि जीवन में उतार-चढ़ाव की श्रृंखला में, आनंद और वायदों के समय के साथ साथ चुनौती और संदेह के मौसम का मिश्रिण भी शामिल होता है। जीवन सिर्फ शिखर की ओर एक स्थिर चढ़ाई नहीं है; बल्कि यह एक ऐसी यात्रा है जिसमें पहाड़ियां और घाटियां भी शामिल होती हैं। हर कोई, विश्वासी और गैर-विश्वासी समान रूप से, जीवन के उतार-चढ़ाव से गुजरता है।

लेकिन मसीहियों के रूप में, परमेश्वर की ओर से हमारे लिए एक अविश्वसनीय वादा है कि हमें जीवन में घाटियों का सामना अकेले नहीं करना पड़ेगा। हमारे लिए यहां उनके द्वारा दिए गए उत्साही वचन हैं:

"तू हियाव बान्ध और दृढ़ हो, उन से न डर और न भयभीत हो; क्योंकि तेरे संग चलने वाला तेरा परमेश्वर यहोवा है; वह तुझ को न धोखा देगा और न छोड़ेगा।" व्यवस्थाविवरण 31:6

सच्चाई यह है कि हमें चुनौती और सफलता के दोनों समयों में परमेश्वर की उपस्थिति की आवश्यकता है। यह जानकर कि परमेश्वर हमारे साथ है, हम जीवन में प्रत्येक चुनौती का सामना निराशा में डूबने की बजाय सफलता की ओर चढ़ने के एक सीढ़ीनुमा-पत्थर के रूप में कर सकते हैं।

कोई पहाड़ इतना ऊंचा नहीं है और न ही कोई घाटी इतनी नीची है जहां परमेश्वर हमसे मिल नहीं सकते। हमारी परिस्थितियां चाहे कैसी भी हों, परमेश्वर विश्वासयोग्य है, और वह हमेशा हमारे साथ है!

"परमेश्वर आपके पास आ गया है"!

अनन्त जीवन का वादा परमेश्वर के हमारे पास आने का परिणाम है न कि मानव जाति द्वारा परमेश्वर को खोजने की कोशिश करना और कुछ दूर किसी स्थान में जाकर उसे खोज निकालना।

समय के आरम्भ से ही, परमेश्वर ने हममें से प्रत्येक को बिना किसी शर्त के अनन्त प्रेम से प्यार किया है। उनका मूल इरादा हम में से प्रत्येक के साथ एक मजबूत और जीवंत संबंध बनाए रखना था। हालांकि, जब आदम और हव्वा ने बगीचे में परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, तो उनके पाप ने हमारे और परमेश्वर के बीच एक बाधा का निर्माण किया। हम अनंतकाल के लिए उनसे अलग हो गए।

हमें उनसे अलग होने की स्थिति में बने रहने देने की बजाय, परमेश्वर ने बहाली के लिए एक आदर्श योजना को क्रियान्वित किया – जो हमारे लिए उनके प्रेम और करुणा से प्रेरित था। उनकी योजना का लक्ष्य मानव जाति के साथ अपने रिश्ते के सबसे अंतरंग पहलुओं को पूरी तरह बहाल करना है जैसा कि यह आदम और हव्वा द्वारा पाप करने से पहले अस्तित्व में था।

लगभग 2,000 साल पहले, परमेश्वर ने पाप के कारण पैदा हुए बाधा को दूर करने के लिए अपने बेटे को धरती पर भेजा, और उद्धार को सभी के लिए उपलब्ध कराया।

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।" यूहन्ना 3:16-17

अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा, यीशु ने हमारी ओर से पाप के दंड के लिए पूर्ण भुगतान किया, और हमारे और परमेश्वर के बीच उत्पन्न हुए बाधा को हटा दिया। यह क्षमा उन सभी के लिए उपलब्ध है जो उन्हें अपने उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करते हैं।

लेकिन यह केवल शुरुआत थी। स्वर्ग में अपने पिता से जुड़ने के लिए पृथ्वी पर अपना समय पूरा करने से पहले यीशु ने अपने शिष्यों को मानव जाति को पूरी तरह से बहाल करने के परमेश्वर की व्यापक योजना का एक और महत्वपूर्ण तत्व बताया:

"मेरे पिता के घर (स्वर्ग) में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं आप से कह देता क्योंकि मैं आपके लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर आपके लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां आप भी रहो।" यूहन्ना 14:2-3

न केवल परमेश्वर ने पाप के बाधा को दूर करने के लिए यीशु को भेजा, बल्कि भविष्य में एक दिन यीशु सभी विश्वासियों को हमेशा उसके साथ रहने के लिए "घर" ले जाने के लिए वापस लौट आएगा।

"स्वर्ग का राजदूत - पवित्र आत्मा"

एक राजदूत किसी सरकार का आधिकारिक प्रतिनिधि होता है जो शांति और अच्छे संबंध के मिशन को पूरा करने के लिए दूसरे देश में उनके लोगों के बीच रहने के लिए भेजा जाता है। वह अपने कर्तव्यों को सरकार के उस अधिकार, उदारता और संसाधनों के साथ पूरा करता है जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है। उसपर जो पूर्ण विश्वास किया जाता है, उसी आधार पर वह गरिमा के साथ अपना उद्देश्य पूरा करता है और कार्य को संपन्न करता है।

कई मायनों में, पवित्र आत्मा का अभियान स्वर्ग से भेजे गए एक राजदूत जैसा ही दिखता है। पवित्र आत्मा परमेश्वर के सभी अधिकार, सामर्थ और संसाधनों का प्रतीक है, और अपनी उपस्थिति और काम के माध्यम से पृथ्वी पर हर व्यक्ति के प्रति परमेश्वर के प्यार को अभिव्यक्त और प्रकट करता है।

जैसे-जैसे यीशु का अपने चेलों से अलग होने का समय नजदीक आने लगा, उसने उनसे कहा कि उसके चले जाने के बाद भी वह उन्हें अकेले नहीं छोड़ेगा। उसने उन लोगों से उसके विषय में कहा जो उसके स्थान पर उनके साथ रहने, उन्हें मार्गदर्शन देने, उन्हें सिखाने, उन्हें सांत्वना देने और उन्हें नेतृत्व करने के लिए भेजा जाएगा – अर्थात् पवित्र आत्मा। यीशु ने कहा:

“तौभी मैं तुम से सच कहता हूं, कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक (पवित्र आत्मा) तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।" यूहन्ना 16:7

पृथ्वी पर यीशु के कार्य पूरा होने के बाद, उसने पवित्र आत्मा को हमारे साथ रहने के लिए अपने स्थान में भेजा जब तक कि वह फिर से लौट न आए। पवित्र आत्मा हमारे जीवन में मार्गदर्शन, अगुवाई, सांत्वना और सलाह प्रदान करता है। यीशु ने पवित्र आत्मा को अपने शिष्यों के सामने इस तरह से वर्णित किया:

“परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने आप से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।" यूहन्ना 14:26

परमेश्वर की उपस्थिति आज हमारे साथ पवित्र आत्मा के रूप में है, और वह सक्रिय रूप से हमारी दुनिया में और हमारे जीवन में काम कर रहा है।

"उनका अभियान व्यक्तिगत है"

सृष्टि के आरम्भ से, पवित्र आत्मा मौजूद है, और हर पीढ़ियों में हमारे बीच निवास कर रहा है।

“और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था: तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था।" उत्पत्ति 1:2

लेकिन जब तक यीशु ने क्रूस पर अपना कार्य पूरा नहीं किया, तब तक पवित्र आत्मा की सेवकाई प्रत्येक विश्वासी के लिए व्यक्तिगत और अंतरंग नहीं बनी। यीशु ने अपनी मृत्यु से पहले अपने शिष्यों से कहा कि पवित्र आत्मा उनके बीच मौजूद था, लेकिन अभी तक उनमें निवास नहीं कर रहा था।

“अर्थात सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है: तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा। मैं तुम्हें अनाथ न छोडूंगा, मैं तुम्हारे पास आता हूं।" यूहन्ना 14:17-18

यीशु की मृत्यु के ठीक पहले उनके शिष्यों को सांत्वना देने का वादा यह था कि वह उनके जीवनों में पवित्र आत्मा की उपस्थिति के माध्यम से आत्मिक रूप से उनके साथ रहेगा। यीशु ने जो काम शुरू किया वह पवित्र आत्मा के माध्यम से हमारे जीवनों में जारी है। परमेश्वर चार चीजें करने के लिए पवित्र आत्मा का उपयोग करता है:

1. वह उद्धार को एक व्यक्तिगत वास्तविकता बनाता है।
2. वह आपको विजयी रूप से जीने को सशक्त करता है।
3. वह आपको बढ़ने में मदद करने के लिए मसीही चरित्र का निर्माण करता है।
4. वह आपकी भलाई के लिए सभी बातों को करता है।

दिन 5 " वह उद्धार को एक व्यक्तिगत वास्तविकता बनाता है"

यद्यपि यह यीशु ही था जिसने हमारे उद्धार की कीमत चुकायी थी, लेकिन यह पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर की उपस्थिति ही है जो उद्धार को किसी के लिए एक व्यक्तिगत वास्तविकता बनाता है जो इसे ग्रहण करते हैं। यीशु ने यह स्पष्ट किया कि जब हम पैदा होते हैं तभी हमें उद्धार नहीं मिलता। एक आत्मिक नया जन्म होता है जो होना चाहिए, जिसका रचियता केवल पवित्र आत्मा ही हो सकता है।

“यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।" – यूहन्ना 3:5-6

जिस क्षण कोई मसीह को अपने जीवन में ग्रहण करता है, तभी वह उनके भीतर के व्यक्ति में आत्मिक नवीनीकरण का आह्वान करता है, जिसके परिणामस्वरूप उनके जीवन से पाप का पूरा जुर्माना पूरी तरह मिटा दिया जाता है।

इसके अलावा, पवित्र आत्मा परमेश्वर के अविश्वसनीय प्रेम को गैर-विश्वासियों पर प्रकट करने के लिए उनके जीवन में काम करता है। यीशु ने कहा,

“परन्तु जब वह सहायक (पवित्र आत्मा) आएगा, जिसे मैं आपके पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा।" यूहन्ना 15:26

आज, पवित्र आत्मा परमेश्वर के प्रेम को यीशु को घोषित करने के द्वारा इस अद्भुत सेवकाई को जारी रखता है जो परमेश्वर के प्रेम का प्रतिरूप हैं, और जो कुछ भी वह हमारी दुनिया में विश्वासियों और गैर-विश्वासियों दोनों को दर्शाता है।

"वह आपको विजयी रूप से जीने को सशक्त करता है"

किसी काम के लिए सही उपकरण के आभाव में, सबसे सरल काम भी काफी भारी लग सकता है। उदाहरण के लिए, एक पेंच को एक पावर स्क्रूड्राइवर के साथ हटाना काफी आसान होता है, लेकिन इसके बिना यह काफी कठिन और मुश्किल होता है।

परमेश्वर की उच्च प्राथमिकताओं में से एक हमें जीवन में सही उपकरण प्रदान करना है। चाहे यह एक बड़े फैसले का सामना करने के लिए बुद्धि हो, एक बुरी आदत पर विजय पाने के लिए इच्छाशक्ति हो, या किसी एक असंभव स्थिति का सामना करने के लिए अतिरिक्त विश्वास और भरोसा हो, परमेश्वर हमें एक संपूर्ण और आशीषित जीवन जीने को तैयार करने के लिए विश्वासयोग्य है।

“तरूण तो थकते और श्रमित हो जाते हैं, और जवान ठोकर खाकर गिरते हैं; परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे, वे उकाबों की नाईं उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे॥" यशायाह 40:30-31

हमारी आशा उसमें रखने से यह हमें एक असीमित उपकरण भण्डार तक पहुंच प्रदान करता है ताकि जो कुछ हम सामना करते हैं उनके लिए हमें सशक्त करे। जब हम ऊपर से सशक्त होते हैं, तो हम विजय में जीते हैं!

"वह आपको बढ़ने में मदद करने के लिए मसीही चरित्र का निर्माण करता है।"

अच्छा चरित्र कुछ ऐसा नहीं है जिसे हम उद्धार के साथ पाते हैं, बल्कि समय के साथ सीखा और विकसित किया जाता है। हमारा चरित्र मसीह की तरह बनाने में मदद करना परमेश्वर के प्राथमिक लक्ष्यों में से एक है। पवित्र आत्मा हमें अपने चरित्र के निर्माण और विकास के द्वारा यीशु की तरह बनने में मदद करता है। बाइबल इसे आत्मा का फल कहती है।

"पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।" गलातियों 5:22-23

चुनौतियों के बीच में, हम कभी-कभी अपनी शक्ति से समस्या को दूर करने की कोशिश करते हैं। ऐसा करके, हम अपने मसीही चरित्र से समझौता करने के लिए भी हमारी कठिनाइयों को दूर करने या "शॉर्टकट लेने" के लिए समझौता करने के प्रलोभन में आ सकते हैं। लेकिन जब हम पवित्र आत्मा की सामर्थ का आह्वान करते हैं, तो वह हमें खराई, सत्य और ईमानदारी के साथ मार्ग में बने रहने में मदद करता है, भले ही परिस्थितियां कैसी भी क्यों न हो।

सफलता के दौर में भी, उसी बाइबल स्तर को बरकरार रखना चाहिए। स्वार्थी गर्व और अहंकार मसीही चरित्र के साथ सीधे संघर्ष में होते हैं जिन्हें परमेश्वर हमारे जीवन में विकसित करना चाहते हैं। वास्तव में, हर मसीही के लिए परमेश्वर से पदोन्नति प्राप्त करते रहने के लिए नम्रता बनाए रखने की आवश्यकता है।

"धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।" मत्ती 5:5

जब हम मसीह समान चरित्र के साथ अपने चुनौतियों और सफलताओं दोनों का सामना करते हैं, तो हम परमेश्वर के साथ चलने में उन्नति करने लगते हैं। हम यह भी पहचानना शुरू करते हैं कि आत्मा के फल में कार्य करना, हमारी भलाई और परमेश्वर की महिमा के लिए काम करता है। जितना अधिक हम परमेश्वर के साथ चलने में बढ़ते जाते हैं, उतना ही परमेश्वर हमारे जीवनों में अधिक आशीषें दे सकते हैं!

"वह आपकी भलाई के लिए सभी बातों को करता है"

हमारे जीवन के हर क्षेत्र में सब बातों पर परमेश्वर का नियंत्रण है। विश्वासियों के रूप में हमारे लाभ के निमित्त काम करने के लिए वह किसी भी परिस्थिति को व्यवस्थित करने में पूरी तरह से सक्षम है।

"और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।" रोमियों 8:28

वह जीवन की सबसे जटिल चुनौतियों को भी संभालने में सक्षम है, और हमें अपने जीवन के लिए अपनी योजना को पूरा करने के मार्ग में अगुवाई करेगा। वह हमसे सिर्फ ऐसा करने के लिए उस पर भरोसा रखने की इच्छा रखता है।

“तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।" नीतिवचन 3:5-6

परमेश्वर में अपना भरोसा रखना व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी और अच्छे भंडारीपन की जगह नहीं लेता है। इसकी बजाय, व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी और परमेश्वर पर भरोसा रखना दोनों साथ साथ चलते है। जब हम अपना हिस्सा पूरा करते हैं, तो परमेश्वर हमेशा अपने हिस्से को पूरा करने के लिए वफादार रहता है और हमें प्रभावी ढंग से ले चलता है।

कई मामलों में, परमेश्वर की अगुवाई हमारी परिस्थितियों में "दरवाजे" खोलने और बंद करने के रूप में आती है। अन्य समयों में, हमारी स्थितियों को ठीक करने के लिए परमेश्वर के दैवीय हस्तक्षेप से कम कुछ भी नहीं होता, कोई चमत्कार, या किसी बात को हासिल करना जो बिल्कुल असंभव लगते थे।

यीशु ने उन की ओर देखकर कहा, “मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।" मत्ती 19:26

चाहे यह किसी गंभीर बीमारी, वित्तीय संकट, या यहां तक कि किसी प्रियजन की अप्रत्याशित हानि का सामना ही करना क्यों न हो, परमेश्वर उस समय के दौरान भी मौजूद रहते हैं और अलौकिक रूप से काम करने में समर्थ है।

परमेश्वर पवित्र आत्मा के माध्यम से विपत्तियों को विजय में बदलने और कठिनाइयों को खुशी में बदलने में एक विशेषज्ञ है। इस बात पर शक न करें कि परमेश्वर आज भी "चमत्कार करने में समर्थ" है। परमेश्वर किसी भी असंभव स्थिति में हस्तक्षेप करने में सक्षम है!